विवेकानन्दजी के उद्गार

१६६
विविध

श्रीरामकृष्ण आश्रम,
नागपुर, मध्यप्रदेश

नवम्बर १९५५]

[मूल्य ।।=)

प्रकाशक :
स्वामी भास्करेश्वरानन्द
अध्यक्ष, श्रीरामकृष्ण आश्रम,
धन्तोली, नागपुर - १, म. प्र.

४०६२

श्रीरामकृष्ण-शिवानन्द-स्मृतिग्रन्थमाला
पुष्प ५४ वाँ
(श्रीरामकृष्ण आश्रम, नागपुर द्वारा सर्वाधिकार स्वरक्षित)

मुद्रक :
डी. पी. देशमुख
बजरंग मुद्रणालय,
कर्नलबाग, नागपुर-२.

दो शब्द

स्वामी विवेकानन्दजी के स्फूर्तिप्रद उद्‌गारों को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत पुस्तक के रूप में रखने हमें बड़ी प्रसन्नता हो रही है। मूल अँगरेजी पुस्तक 'Thus Spake Vivekananda' के हिन्दी रूपान्तर की माँग हिन्दी भाषी जनता काफी अरसे से कर रही थी। प्रस्तुत प्रकाशन इसी अँगरेजी पुस्तक का हिन्दी रूपान्तर है।

इसमें की अधिकांश कविताओं के अनुवाद का श्रेय हिन्दी जगत् के लब्धप्रतिष्ठ लेखक एवं कवि प. शुकदेवप्रसादजी तिवारी (श्री विनयमोहन शर्मा), एम. ए., एल्‌एल्. बी., प्राध्यापक, नागपुर महाविद्यालय, को है। उनके इस बहुमूल्य कार्य के लिए हम उनका हार्दिक आभार मानते हैं।

हमारा विश्वास है, पाठक इस नए प्रकाशन से अवश्य लाभान्वित होंगे।

नागपुर,
१-११-५५

प्रकाशक

अनुक्रमणिका

विषय

१. आशीर्वाद ... ...

२. बल ... ...

३. सेवा ... ...

४. आत्म-संयम ... ...

५. त्याग ... ...

६. श्रद्धा ... ...

७. भारत को आह्वान ... ...

८. छन्दो मे उपदेश ... ...

९. प्रार्थना ... ...

विवेकानन्दजी के उद्‌गार

बल

मेरे साहसी युवको, यह विश्वास रखो कि तुम्ही सब कुछ हो — महान् कार्य करने के लिए इस धरती पर आए हो। गीदड़-घुड़कियों से भयभीत न हो जाना — नहीं, चाहे वज्र भी गिरे, तो भी निडर हो खड़े हो जाना और कार्य में लग जाना।

तुम्हारे देश को वीरों की आवश्यकता है, अतः वीर बनो। पर्वत की भाँति अडिग रहो। 'सत्यमेव जयते' — सत्य की ही सदैव विजय होती है। भारत चाहता है एक नई विद्युत्-शक्ति, जो राष्ट्र की नस-नस में नया जीवन संचार कर दे। साहसी बनो साहसी बनो, मनुष्य तो एक बार ही मरता है। मेरे शिष्य कायर न हों। मुझे कायरता से घृणा है। गम्भीर-से-गम्भीर कठिनाइयों में भी अपना मानसिक सन्तुलन बनाए रखो; मूढ़, अबोध जीव तुम्हारे विरुद्ध क्या

कहते हैं; इसकी तनिक भी परवाह न करो। उपेक्षा! उपेक्षा! उपेक्षा! ध्यान रखो, आँखें दो हैं, कान भी दो हैं, पर मुँह केवल एक है। पर्वतकाय विघ्न-बाधाओं में से होते हुए ही सारे महान् कार्य सम्पन्न होते हैं। अपना पुरुषार्थ प्रकट करो। काम और कांचन मे जकडे हुए मोहान्ध व्यक्ति उपेक्षा की ही दृष्टि से देखे जाने योग्य हैं।

❖ ❖

तुम क्यो रोते हो, बन्धु? तुम्ही में तो सारी शक्ति निहित है। ऐ महान्, अपनी सर्वशक्तिमान प्रकृति को उद्बुद्ध करो; देखोगे, यह सारी दुनिया तुम्हारे पैरों पर लोटने लगेगी। एकमात्र आत्मा ही शासन करती है, जडपदार्थ क्या शासन करेगा! अपने को शरीर से अभिन्न समझनेवाले मूर्ख व्यक्ति ही करुण स्वर से चिल्लाते हैं, 'हम दुर्बल हैं, हम दुर्बल हैं।' आज देश को आवश्यकता है साहस और वैज्ञानिक प्रतिभा की। हम चाहते हैं प्रबल साहस,

प्रचण्ड शक्ति और अदम्य उत्साह। स्त्रियोचित व्यवहार से काम नही बनने का। भाग्य-लक्ष्मी उसी के पास आती है, जो पुरुषार्थी है, जिसके सिंह का हृदय है। पीछे देखने का काम ही नही। आगे! आगे! बढ़े चलो! हम चाहते हैं अनन्त शक्ति, असीम उत्साह, अनन्त साहस और अनन्त धैर्य। तभी महान् कार्य सम्पन्न होगे।

❖ ❖

वेदान्त 'पाप' की बात नही मानता, वह केवल 'भूल' की बात स्वीकार करता है; और उसके मत से, तुम सबसे बड़ी भूल तो तब करते हो, जब तुम कहते हो, "मै कमजोर हूँ, मै पापी हूँ, एक दुःखी जीव हूँ, मुझमें कुछ भी शक्ति नही—मुझमें कुछ भी करने की ताकत नही।"

❖ ❖

प्राचीन धर्मों ने कहा, "वह नास्तिक है, जो ईश्वर मे विश्वास नही करता।" नया धर्म कहता

है, "नास्तिक वह है, जो स्वयं में विश्वास नहीं करता।"

❖ ❖

बल ही जीवन है और दुर्बलता मृत्यु। बल ही परम आनन्द है, शाश्वत और अमर जीवन है। दुर्बलता निरन्तर भारस्वरूप है, दुःखस्वरूप है। दुर्बलता ही मृत्यु है। बचपन से ही तुम्हारे मस्तिष्क में रचनात्मक, बलप्रद और सहायक विचार प्रवेश करें।

❖ ❖

दु.ख-भोग का एकमात्र कारण है दुर्बलता। हम दुःखी हो जाते हैं, क्योकि हम दुर्बल हैं। हम झूठ बोलते हैं, चोरी करते हैं, हत्या करते हैं, तरह-तरह के अपराध करते हैं—क्यों? इसलिए कि हम दुर्बल हैं। हम दु.ख भोगते हैं, क्योंकि हम दुर्बल हैं। हम मर जाते हैं, क्योकि हम दुर्बल हैं। जहाँ हमें दुर्बल कर देनेवाली कोई चीज नहीं, वहाँ न मृत्यु है, न दु.ख।

❖ ❖

बल ही एकमात्र आवश्यक वस्तु है। बल ही भवरोग की एकमात्र दवा है। धनिकों द्वारा रौंदे जानेवाले निर्धनों के लिए बल ही एकमात्र दवा है। विद्वानों द्वारा दबाए जानेवाले अज्ञजनों के लिए बल ही एकमात्र दवा है, और अन्य पापियों द्वारा सताए जानेवाले पापियों के लिए भी वही एकमात्र दवा है।

❖ ❖

खड़े होओ, साहसी बनो, शक्तिमान होओ। सारा उत्तरदायित्व अपने कन्धों पर लो, और जान लो कि तुम्हीं अपने भाग्य के विधाता हो। तुम्हें जो कुछ बल और सहायता चाहिए, सब तुम्हारे ही भीतर है। अतएव अपना भविष्य तुम स्वयं गढ़ो।

❖ ❖

सारे समय अपने को रोगी सोचते रहना रोग-मुक्ति का उपाय नहीं है; उसके लिए दवा की आवश्यकता है। दुर्बलता की बात मन में लाने से

कोई लाभ नही होता। बल दो—शक्ति दो, और सारे समय दुर्बलता की बात सोचते रहने से बल नही आता। दुर्बलता पर सोच करते रहना दुर्बलता दूर करने का उपाय नही; उपाय है—बल की बात मन में लाना।

❖ ❖

इस संसार मे हो या धर्म के संसार में, यह सत्य है कि भय ही पतन और पाप का निश्चित कारण है। भय से ही दु:ख-कष्ट होता है, भय से ही मृत्यु आती है, और भय से ही सारी बुराइयाँ उत्पन्न होती हैं। इस भय का कारण क्या है?—अपने स्वरूप के सम्बन्ध में हमारा अज्ञान। हममें से प्रत्येक उस 'राजाधिराज' का—उस 'सम्राटों के सम्राट' का निश्चित उत्तराधिकारी है।

❖ ❖

जान लो कि सारे पापो और सारी बुराइयों को एक ही शब्द द्वारा व्यक्त किया जा सकता है

और वह है—'दुर्बलता'। समस्त असत् कार्यों के पीछे यह दुर्बलता ही एकमात्र प्रेरक शक्ति है। यह दुर्बलता ही सारी स्वार्थपरता की जड़ है। इस दुर्बलता के कारण ही मनुष्य में दूसरों पर आघात करने की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। इस दुर्बलता के कारण ही मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप को प्रकट नहीं कर पाता।

❖ ❖

मनुष्य तभी तक मनुष्य है, जब तक वह प्रकृति से ऊपर उठने के लिए संघर्ष करता रहता है। यह प्रकृति दो प्रकार की है—आन्तर और बाह्य। बाह्य प्रकृति को अपने वश में कर लेना बड़ी अच्छी और बड़े गौरव की बात है, पर अन्त.प्रकृति पर विजय पा लेना उससे भी अधिक गौरव की बात है। ग्रहों और तारों का नियमन करनेवाले नियमों का ज्ञान प्राप्त कर लेना गौरवपूर्ण है, पर मानवजाति की वासनाओं, भावनाओं और इच्छा को नियमन करनेवाले नियमों

ई लाभ नहीं होता। बल दो—शी
र सारे समय दुर्बलता की बात सोच
ल नही आता। दुर्बलता पर सोच म
लता दूर करने का उपाय नही; उपाय

हम काफी रो चुके; अब और रोने की आवश्यकता नहीं। अब अपने पैरों पर खड़े होओ और 'मनुष्य' बनो। हम 'मनुष्य' बनानेवाला धर्म ही चाहते हैं। हम 'मनुष्य' बनानेवाले सिद्धान्त ही चाहते हैं। हम सर्वत्र, सभी क्षेत्रों में, 'मनुष्य' बनानेवाली शिक्षा ही चाहते हैं। और यह रही सत्य की कसौटी — जो कुछ तुम्हें शरीर से, बुद्धि से या आत्मा से कमजोर बनाए, उसे विष की भाँति त्याग दो; उसमें जीवन-शक्ति नहीं है, वह कभी सत्य नहीं हो सकता। सत्य तो बलप्रद है, पवित्रता-स्वरूप है, ज्ञानस्वरूप है। सत्य तो वह है, जो शक्ति दे, जो हृदय के अन्धकार को दूर कर दे, जो हृदय में स्फूर्ति भर दे।

◆ ◆

हम तोते के समान कई बातें बोल जाते हैं, पर उनमें से एक को भी कार्य में नहीं उतारते। केवल मुख से कह देना और आचरण में न लाना—

को जान लेना उससे अनन्तगुना अधिक गौरवपूर्ण है।

❖

मनुष्य सारे प्राणियों से श्रेष्ठ है, सारे देवताओ से श्रेष्ठ है; उससे श्रेष्ठ और कोई नही। देवताओ को भी फिर से धरती पर नीचे आना पड़ेगा और मनुष्य-शरीर धारण कर मुक्ति प्राप्त करनी होगी। केवल मनुष्य ही पूर्णता प्राप्त करता है, देवताओ तक के भाग्य मे यह नही है।

❖

आज हमारे देश को जिस चीज की आवश्यकता ..., वह है लोहे की मासपेशियाँ और फौलाद के ...ायु—प्रचण्ड इच्छाशक्ति, जिसका अवरोध दुनिया ... कोई ताकत न कर सके, जो जगत् के गुप्त तथ्यों ... रहस्यों को भेद सके और जिस उपाय से भी हो ... उद्देश्य की पूर्ति करने मे समर्थ हो, फिर चाहे ...तल मे ही क्यो न जाना पड़े—साक्षात् मृत्यु ... सामना क्यो न करना पडे।

❖

❖

हम काफी रो चुके; अब और रोने की आवश्यकता नही। अब अपने पैरो पर खड़े होओ और 'मनुष्य' बनो। हम 'मनुष्य' बनानेवाला धर्म ही चाहते हैं। हम 'मनुष्य' बनानेवाले सिद्धान्त ही चाहते हैं। हम सर्वत्र, सभी क्षेत्रो मे, 'मनुष्य' बनानेवाली शिक्षा ही चाहते हैं। और यह रही सत्य की कसौटी — जो कुछ तुम्हे शरीर से, बुद्धि से या आत्मा मे कमजोर बनाए, उसे विष की भाँति त्याग दो, उसमे जीवन-शक्ति नही है, वह कभी सत्य नही हो सकता। सत्य तो बलप्रद है, पवित्रता-स्वरूप है, ज्ञानस्वरूप है। सत्य तो वह है, जो शक्ति दे, जो हृदय के अन्धकार को दूर कर दे, जो हृदय में स्फूर्ति भर दे।

हम तोते के समान कई बातें बोल जाते हैं, पर उनमें से एक को भी कार्य में नही उतारते। केवल मुख से कह देना और आचरण में न लाना—

यह हमारा एक स्वभाव ही बन गया है। इसका क्या कारण है ?—शारीरिक दुर्बलता। इस प्रकार का दुर्बल मस्तिष्क कुछ भी नही कर सकता। हमें उसको शक्तिशाली बनाना होगा। सबसे पहले हमारे नवयुवको को बली होना चाहिए। धर्म फिर बाद में आयगा। तुम गीता के अध्ययन की अपेक्षा फुटबाल के द्वारा स्वर्ग के अधिक समीप पहुँच सकोगे। जब तुम्हारी मांसपेशियाँ कुछ मजबूत हो जायँगी, तब तुम गीता को अधिक अच्छा समझ सकोगे। जब तुम्हारे खून में कुछ जोर आ जायगा, तब तुम कृष्ण की महान् प्रतिभा और प्रचण्ड शक्ति को और भी अच्छी तरह समझ सकोगे। जब तुम अपने पैरों पर दृढ़ता के साथ खड़े रह सकोगे और अपने को 'मनुष्य' अनुभव करोगे, तब उपनिषदों और आत्मा की महत्ता को और भी अच्छी तरह जान सकोगे।

उदार बनो। ध्यान रखो, जीवन का एकमात्र चिह्न है गति और विकास।

❖ ❖

नीतिपरायण बनो, साहसी बनो, धुन के पक्के बनो—तुम्हारे नैतिक चरित्र में कहीं एक धब्बा तक न हो, मृत्यु से भी मुठभेड़ लेने की हिम्मत रखो। धर्म के सिद्धान्तों के बारे में माथापच्ची करने की कोई आवश्यकता नहीं, कायर ही पाप-कर्म करते हैं, साहसी कभी नहीं। हर एक के प्रति प्रेम की भावना लाने का प्रयत्न करो।

❖ ❖

बाहरी आडम्बर से कोई महान् कार्य नहीं होता। प्रेम से—सत्य के प्रति तीव्र प्रेम से और अदम्य उत्साह से ही सारे कार्य सम्पन्न होते हैं। अतएव अपना पुरुषार्थ प्रकट करो।

❖ ❖

आज हमें रजोगुण की अतीव आवश्यकता है।

यह हमारा एक स्वभाव ही बन गया है। इसका क्या कारण है?—शारीरिक दुर्बलता। इस प्रकार का दुर्बल मस्तिष्क कुछ भी नहीं कर सकता। हमें उसको शक्तिशाली बनाना होगा। सबसे पहले हमारे नवयुवकों को बली होना चाहिए। धर्म फिर बाद में आयगा। तुम गीता के अध्ययन की अपेक्षा फुटबाल के द्वारा स्वर्ग के अधिक समीप पहुँच सकोगे। जब तुम्हारी मांसपेशियाँ कुछ मजबूत हो जायँगी, तब तुम गीता को अधिक अच्छा समझ सकोगे। जब तुम्हारे खून में कुछ जोर आ जायगा, तब तुम कृष्ण की महान् प्रतिभा और प्रचण्ड शक्ति को और भी अच्छी तरह समझ सकोगे। जब तुम अपने पैरों पर दृढ़ता के साथ खड़े रह सकोगे और अपने को 'मनुष्य' अनुभव करोगे, तब उपनिषदों और आत्मा की महत्ता को और भी अच्छी तरह जान सकोगे।

उदार बनो। ध्यान रखो, जीवन का एकमात्र चिह्न है गति और विकास।

❖ ❖

नीतिपरायण बनो, साहसी बनो, धुन के पक्के बनो—तुम्हारे नैतिक चरित्र मे कही एक धब्बा तक न हो, मृत्यु से भी मुठभेड लेने की हिम्मत रखो। धर्म के सिद्धान्तो के बारे में माथापच्ची करने की कोई आवश्यकता नही, कायर ही पाप-कर्म करते है, साहसी कभी नही। हर एक के प्रति प्रेम की भावना लाने का प्रयत्न करो।

❖ ❖

बाहरी आडम्बर से कोई महान् कार्य नही होता। प्रेम से—सत्य के प्रति तीव्र प्रेम से और अदम्य उत्साह से ही सारे कार्य सम्पन्न होते हैं। अतएव अपना पुरुषार्थ प्रकट करो।

❖ ❖

आज हमें रजोगुण की अतीव आवश्यकता है।

आज जिन्हें तुम सात्त्विक समझते हो, उनमें नब्बे प्रतिशत से भी अधिक लोग असल में घोर तमोगुण में डूबे हुए हैं। हमें आज जिसकी आवश्यकता है, वह है राजसिक शक्ति की प्रचुरता, क्योंकि सारा देश तमोगुण के आवरण में ढका हुआ है। यहाँ के लोगों को रोटी और कपड़ा दो—उन्हें जगाओ—उन्हें और भी अधिक क्रियाशील बनाओ। अन्यथा वे तो पत्थरों और वृक्षों के सदृश जड़ हो जायँगे।

❖ ❖

अपने सामने एक आदर्श रखकर बढ़नेवाला व्यक्ति यदि हजार गलतियाँ करता हो, तो मैं दृढ़ता-पूर्वक कहता हूँ कि बिना आदर्श का मनुष्य पचास हजार करेगा। अतएव आदर्श रखना श्रेष्ठतर है।

❖ ❖

अहा, यदि केवल तुम जान लेते कि तुम कौन हो! तुम आत्मा हो, तुम ईश्वर हो। यदि कोई

अधार्मिक बात है, तो वह है तुमको मनुष्य कहना।

❖ ❖

मेरा जीवन सत्य के लिए है। सत्य कभी भी मिथ्या के साथ मेल नहीं करेगा। यहाँ तक कि यदि सारी दुनिया भी मेरे विरोध में खड़ी हो जाय तो भी अन्त में सत्य की ही विजय होगी।

❖ ❖

यह संसार कायरों के लिए नहीं है। भागने का प्रयत्न मत करो। सफलता या असफलता की परवाह मत करो।

❖ ❖

मैंने कभी बदला लेने की बात नहीं कही मैंने सर्वदा बल की ही बात कही है।

❖ ❖

उठो, और काम में लग जाओ। यह जीवन भला है कितने दिन? जब तुम इस दुनिया में आए हो, तो कुछ चिह्न छोड़ जाओ। अन्यथा तुमने

और वृक्ष आदि में अन्तर ही क्या ?— वे भी तो पैदा होते हैं, परिणाम को प्राप्त होते हैं और मर जाते हैं।

साहसी होओ ! मेरे बच्चों को सबसे पहले साहसी होना चाहिए। किसी भी दशा में सत्य के साथ थोडासा भी समझौता न करो। उच्चतम सत्यों का प्रचार करो — उन्हें दुनिया भर में बिखेर दो। मान खो बैठने अथवा अप्रिय संघर्ष उत्पन्न हो जाने का भय मत करो। यह निश्चित जान लो कि यदि तुम नाना प्रकार के प्रलोभनों के बावजूद भी सत्य से लगे रह सको, तो तुममें ऐसी दैवी शक्ति आ जायगी, जिसके समक्ष लोग तुमसे वे बातें कहते डरेंगे, जिन्हें तुम सत्य नहीं समझते। यदि तुम लगातार चौदह वर्ष तक अखण्ड रूप से कठोरता के साथ सत्य का पालन कर सको, तो तुम जो कुछ कहोगे, लोग उसी पर पक्का विश्वास कर लेंगे।

वत्स, मैं चाहता हूँ लोहे की मांसपेशियाँ और फौलाद के स्नायु, जिनके अन्दर ऐसे मन का वास हो, जो वज्र के उपादानों से गठित हो।

❖ ❖

सत्य असत्य से अनन्तगुना प्रभावशाली है और ऐसे ही भलाई भी बुराई से। यदि ये बातें तुममें हों, तो वे अपने प्रभाव से ही अपना रास्ता बना लेंगी।

❖ ❖

क्या तुम पर्वताकार विघ्न-बाधाओं को लाँघकर कार्य करने को तैयार हो? यदि सारी दुनिया हाथ में नंगी तलवार लेकर तुम्हारे विरोध में खड़ी हो जाय, तो भी क्या तुम जिसे सत्य समझते हो, उसे पूरा करने का साहस करोगे? यदि तुम्हारे स्त्री-पुत्र तुम्हारे प्रतिकूल हो जायें, भाग्य-लक्ष्मी तुमसे रूठकर चली जाय, नाम-कीर्ति भी तुम्हारा साथ छोड़ दे, तो भी तुम उस सत्य से अलग तो न होगे?

फिर भी उससे लगे रहकर अपने लक्ष्य की ओर
बढ़ते रहोगे न ?

❖

सत्य का अनुसरण करो, फिर वह तुम्हे च
जहाँ ले जाय, प्रत्येक भाव को उसके चरम सिद्धा
तक ले जाओ। कायर और कपटी मत होना।

❖

हमें अपने में आशावादी प्रवृत्ति उत्पन्न करनी
होगी और प्रत्येक वस्तु में स्थित शुभ को ही देखने
का प्रयत्न करना होगा। यदि हम घुटनों पर सिर
टेककर अपनी शारीरिक और मानसिक अपूर्णताओं
पर रोते रहें, तो उससे क्या होगा ? वास्तव में,
विपरीत परिस्थितियों को दबा देने के लिए जो
वीरतापूर्ण प्रयत्न है, वही एकमात्र ऐसा है, जो हमारी
आत्मा को ऊपर उठाता जाता है।

❖

याग-यज्ञ, प्रणाम-दंडवत् और जप-जाप आदि

धर्म नही है। वे वही तक अच्छे है, जहाँ तक वे हमे सुन्दर और वीरतापूर्ण कार्य करने की प्रेरणा देते है तथा हमारे विचारो को इतना उन्नत बना देते है, जिससे हम दैवी पूर्णता की धारणा कर सकें।

❖ ❖

पहले, हम स्वयं देवता बने और फिर दूसरो को देवता बनने में सहायता दें। "बनो और बनाओ"— बस यही हमारा मंत्र हो।

❖ ❖

केवल हमारे शास्त्रो में ही भगवान को 'अभी' विशेषण दिया गया है। हमें अभीः—निर्भय—होना होगा, और बस, हमारा काम बन जायगा।

❖ ❖

अपना अन्तरस्थ ब्रह्मभाव अभिव्यक्त करो, फिर सब कुछ उसके चारों ओर समरस रूप से संयोजित हो जायगा।

सेवा

प्रत्येक मनुष्य को, प्रत्येक स्त्री को — हर एक जीव को भगवत्-स्वरूप समझो। तुम किसी की सहायता नहीं कर सकते; तुम केवल सेवा मात्र कर सकते हो, प्रभु की सन्तानों की सेवा करो, साक्षात् प्रभु की ही सेवा करो — जब कभी तुम्हें अवसर मिले। यदि प्रभु की इच्छा से तुम उनकी किसी सन्तान की सेवा कर सको, तो सचमुच तुम धन्य हो, अपने आपको बड़ा मत समझो। तुम धन्य हो कि वह अवसर तुम्हें दिया गया—दूसरों को नहीं। उसे पूजा की ही दृष्टि से देखो। गरीब और दुःखी लोग तो हमारी ही मुक्ति के लिए हैं, ताकि रोगी, पागल, कोढ़ी और पापी के रूप में अपने सामने आनेवाले प्रभु की हम सेवा कर सकें।

❖ ❖

मानव-देहमन्दिर में प्रतिष्ठित मानव-आत्मा ही

एकमात्र पूजार्ह भगवान है । अवश्य, समस्त प्राणियों की देह भी मन्दिर है, पर मानव-देह सर्वश्रेष्ठ है— वह मन्दिरों में ताजमहल है । यदि मैं उसमें भगवान की पूजा न कर सकूँ, तो और कोई भी मन्दिर किसी काम का न होगा ।

अतएव प्रतिज्ञा कर लो कि तुम अपना सारा जीवन दिन-पर-दिन नीचे गिरते जानेवाले इन तीस करोड़ लोगों के उत्थान के लिए उत्सर्ग कर दोगे ।

मैं उसी को महात्मा कहता हूँ, जिसका हृदय गरीबों के लिए रोता है अन्यथा वह तो दुरात्मा है ।

जब तक लाखों लोग भूखे और अज्ञानी हैं, तब तक मैं उस प्रत्येक व्यक्ति को कृतघ्न समझता

को जान लेना उससे अनन्तगुना अधिक गौरवपूर्ण है।

❖ ❖

मनुष्य सारे प्राणियों से श्रेष्ठ है, सारे देवताओं से श्रेष्ठ है; उससे श्रेष्ठ और कोई नही। देवताओं को भी फिर से धरती पर नीचे आना पड़ेगा और मनुष्य-शरीर धारण कर मुक्ति प्राप्त करनी होगी। केवल मनुष्य ही पूर्णता प्राप्त करता है, देवताओं तक के भाग्य में यह नही है।

❖ ❖

आज हमारे देश को जिस चीज की आवश्यकता है, वह है लोहे की मासपेशियाँ और फौलाद के स्नायु — प्रचण्ड इच्छाशक्ति, जिसका अवरोध दुनिया की कोई ताकत न कर सके, जो जगत् के गुप्त तथ्यों और रहस्यों को भेद सके और जिस उपाय से भी हो अपने उद्देश्य की पूर्ति करने मे समर्थ हो, फिर चाहे समुद्रतल में ही क्यो न जाना पड़े — साक्षात् मृत्यु का ही सामना क्यो न करना पड़े।

❖ ❖

हम काफी रो चुके; अब और रोने की आवश्यकता नहीं। अब अपने पैरों पर खड़े होओ और 'मनुष्य' बनो। हम 'मनुष्य' बनानेवाला धर्म ही चाहते हैं। हम 'मनुष्य' बनानेवाले सिद्धान्त ही चाहते हैं। हम सर्वत्र, सभी क्षेत्रों में, 'मनुष्य' बनानेवाली शिक्षा ही चाहते हैं। और यह रहे सत्य की कसौटी — जो कुछ तुम्हें शरीर से, बु॰ से या आत्मा से कमजोर बनाए, उसे विष की भाँ॰ त्याग दो, उसमें जीवन-शक्ति नहीं है, वह क॰ सत्य नहीं हो सकता। सत्य तो बलप्रद है, पवित्र॰ स्वरूप है, ज्ञानस्वरूप है। सत्य तो वह है, ॰ शक्ति दे, जो हृदय के अन्धकार को दूर कर दे, हृदय में स्फूर्ति भर दे।

° °

हम तोते के समान कई बातें बोल जाते पर उनमें से एक को भी कार्य में नहीं उतार केवल मुख से कह देना और आचरण में न लाना

मे बिलकुल निष्फल रहो। जब तक तुममे विश
सचाई और निष्ठा है तब तक प्रत्येक क्षेत्र मे उ
होगी। जब तक तुममे आपस मे अनमेल का
नही है, तब तक मै विश्वास दिलाता हूँ अग
की दया से तुम्हारे लिए कोई भय नही है। अ
हृदय तब तक न खोलो जब तक तुम यह नि
रूप से न जान लो कि उसमे सचमुच
होगा। अपने बड़े-से-बड़े शत्रु के प्रति भी
उपकारी शब्दों का प्रयोग करो।

° °

सारा विकास ही जीवन है और सारा सं
ही मृत्यु। प्रेम ही विकास है और स्वार्थपर
संकोच। अतएव प्रेम ही जीवन का एकमात्र नि
है। जो प्रेम करता है, वह जीता है जो स्वार्थ
वह मरता है। अतएव प्रेम के लिए ही प्रेम क
क्योंकि प्रेम ही जीवन का एकमात्र नियम है।

° °

हमारा उद्देश्य है संसार का भला करना, न कि अपने नाम का ढोल पीटना।

❖ ❖

मैं तुम सबसे यही एक बात चाहता हूँ कि तुम सदा के लिए स्वार्थपरता, कलहप्रियता और ईर्ष्या का त्याग कर दो। तुम सबको धरती माता की भाँति सर्वसहिष्णु होना चाहिए। यदि तुम ऐसे हो सको, तो सारी दुनिया तुम्हारे पैरों पर लोटने लगेगी।

❖ ❖

जो आज्ञापालन करना जानता है, वही आज्ञा देना भी जानता है। पहले आज्ञापालन करना सीखो। हम चाहते हैं संगठन। संगठन ही शक्ति है, और उसका रहस्य है—आज्ञापालन।

❖ ❖

जो मानव-जाति की सहायता करना चाहते हैं, उन्हें चाहिए कि वे पहले अपने सुख और दुःख,

नाम और यश, तथा सर्वविध स्वार्थी भावनाओं की एक गठरी बनाकर उसे समुद्र में फेंक दें, और तब भगवान के पास आएँ। यही सारे धर्म-प्रवर्तकों ने कहा और किया है।

पक्षपात ही सारी बुराइयों का प्रधान कारण है।

मुझे अपने मानव-बन्धुओं की सहायता करने दो—मैं बस यही चाहता हूँ।

यदि तुम चाहते हो कि कुछ भला हो, तो अपने इन बाह्य अनुष्ठानों को तिलांजलि दे दो और पूजा करो जीवन्त ईश्वर की, मानव-देव की—प्रत्येक जीव की, जो मानव-रूप लिए हुए है—भगवान के समष्टि रूप की और साथ ही उसके व्यष्टि रूप की भी।

समय आने पर सब कुछ हो जायगा। ध्यान रखो, ऐसा करने से कुछ भी न हो सकेगा।

❖ ❖

शक्ति और अन्य आवश्यक बातें अपने आप ही आ जायँगी। अपने को काम में लगा दो; देखोगे, तुममें इतनी शक्ति आने लगेगी कि उसको सहन करना कठिन महसूस होने लगेगा। दूसरों के लिए किया गया तनिकसा भी कार्य अन्तःस्थ शक्ति को प्रबुद्ध कर देता है, दूसरों के प्रति थोड़ीसी भलाई का विचार भी क्रमशः हृदय में सिंह का बल संचारित कर देता है। मैं तुम सबसे इतना प्रेम करता हूँ, मेरी हार्दिक इच्छा है कि तुम सब लोग दूसरों के लिए कार्य करते-करते मृत्यु को प्राप्त होओ—तुम्हें ऐसा करते देख मुझे तो प्रसन्नता ही होगी!

❖ ❖

अपनी गरीबी के विचार दूर फेंक दो! भला

तुम किन बातों में गरीब हो ? क्या तुम इसलिए सोच करते हो कि तुम्हारे पास सोफा-कोच आदि नहीं है अथवा दस-बीस नौकर नहीं है, जो तुम्हारे हांक मारते ही दौड़कर हाजिर हो जायँ ? उससे क्या ? तुम क्या जानो कि यदि तुम अपने हृदय का खून बहाते हुए दूसरों के लिए दिन-रात कार्य करते रहो, तो दुनिया में ऐसा कुछ भी न रह जायगा, जो तुम न कर सको !

❖ ❖

एक समय आता है, जब मनुष्य अनुभव करता है कि एक चिलम भरकर मनुष्य की सेवा करना भी लाखों जप-ध्यान से कहीं बढ़कर है।

❖ ❖

जब तक "मत छुओ-वाद" तुम्हारा धर्म और रसोई का बरतन तुम्हारा देवता है, तब तक तुम्हारी आध्यात्मिक उन्नति नहीं हो सकती।

❖ ❖

प्रत्येक कर्मफल भले और बुरे का मिश्रण है। ऐसा कोई भी शुभ कर्म नही है, जिसमें अशुभ का सस्पर्श न हो। आग के चारों ओर व्याप्त धुएँ के समान कर्म मे सदैव कुछ-न-कुछ अशुभ लगा ही रहता है। हमें ऐसे कार्यों में रत रहना चाहिए, जिनसे भलाई अधिक-से-अधिक मात्रा में हो और बुराई कम-से-कम।

❖ ❖

क्या तुम सोचते हो कि तुम एक चींटी तक को अपनी सहायता से बचा सकते हो? यह महान् अधार्मिक विचार है! ऐसा सोचना अधर्म है! दुनिया को तुम्हारी कतई जरूरत नही। धन्य हैं हम, जो हमें प्रभु के लिए कार्य करने का सौभाग्य मिला। इस 'सहायता' शब्द को अपने मन से बिलकुल निकाल दो। तुम सहायता नही कर सकते। तुम केवल पूजा—सेवा ही कर सकते हो। अतएव सारे संसार के प्रति इस प्रकार का श्रद्धापूर्ण भाव

से घृणा करके नहीं जी सकता। भारत का भाग्य-सितारा तो उसी दिन अस्त हो गया जिस दिन उसने 'म्लेच्छ' शब्द का आविष्कार किया और दूसरों के साथ मेल-जोल बन्द कर दिया।

हे नवयुवको, मैं गरीबों, मूर्खों और उत्पीड़ितों के लिए इस सहानुभूति और अथक प्रयत्न को दाय के तौर पर तुम्हें सौंपता हूँ। जाओ, इसी क्षण जाओ उस पार्थसारथि के मन्दिर में, जो गाकुल के दीन-दरिद्र ग्वालों के सखा थे, जो गुहक चण्डाल को भी गले लगाने में नहीं हिचके, जिन्होंने अपने बुद्ध-अवतार में अमीरों का न्योता अस्वीकार कर एक वारांगना का न्योता स्वीकार किया और उसे उबारा। जाओ उनके पास, जाकर साष्टांग प्रणाम करो और उनके सम्मुख एक महा बलि दो, अपने जीवन की बलि दो—उन दीन, पतित और उत्पीड़ितों के लिए, जिनके लिए भगवान युग-युग में अवतार लिया

पवित्र है और कर्तव्य-निष्ठा भगवत्पूजा का सर्वोत्कृष्ट रूप है।

❖ ❖

मरते दम तक काम करते रहो—मैं तुम्हारे साथ हूँ, और जब मैं चला जाऊँगा, तो मेरी आत्मा तुम्हारे साथ काम करेगी। यह जीवन तो आता है और जाता है—धन, नाम-यश और सुख-भोग तो केवल दो दिन के हैं। संसारी कीट की भाँति मरने की अपेक्षा कर्तव्य के क्षेत्र में सत्य का प्रचार करते हुए मर जाना कहीं अधिक श्रेष्ठ है—लाखगुना अधिक श्रेष्ठ है। आगे बढ़ो!

❖ ❖

ईर्ष्या और छल-कपट छोड़ो। एक होकर दूसरों के लिए कार्य करना सीखो। यही हमारे देश की एक बड़ी आवश्यकता है।

❖ ❖

वत्स! कोई भी मनुष्य, कोई भी राष्ट्र दूसरे

से घृणा करके नहीं जी सकता। भारत का भाग्य-सितारा तो उसी दिन अस्त हो गया, जिस दिन उसने 'म्लेच्छ' शब्द का आविष्कार किया और दूसरों के साथ मेल-जोल बन्द कर दिया।

❖ ❖

ऐ नवयुवको, मैं गरीबों, मूर्खों और उत्पीड़ितों के लिए इस सहानुभूति और अथक प्रयत्न को थाती के तौर पर तुम्हें सौंपता हूँ। जाओ, इसी क्षण जाओ उस पार्थसारथि के मन्दिर में, जो गोकुल के दीन-दरिद्र ग्वालों के सखा थे, जो गुहक चण्डाल को भी गले लगाने में नहीं हिचके, जिन्होंने अपने बुद्ध-अवतार में अमीरों का न्योता अस्वीकार कर एक वारांगना का न्योता स्वीकार किया और उसे उबारा; जाओ उनके पास, जाकर साष्टांग प्रणाम करो और उनके सम्मुख एक महा बलि दो, अपने जीवन की बलि दो—उन दीन, पतित और उत्पीड़ितों के लिए, जिनके लिए भगवान युग-युग में अवतार लिया

पवित्र है और कर्तव्य-निष्ठा भगवान्
रूप है।

मरते दम तक काम करते रहो—
साथ हूँ, और जब मैं चला जाऊँगा,
तुम्हारे साथ काम करेगी। यह जीवन
और जाता है—धन, नाम-यश और
केवल दो दिन के हैं। संसारी कीट
की अपेक्षा कर्तव्य के क्षेत्र में सत्य का
हुए मर जाना कहीं अधिक श्रेष्ठ है—
अधिक श्रेष्ठ है। आगे बढ़ो!

ईर्ष्या और छल-कपट छोड़ो। दूसरों के लिए कार्य करना सीखो। यही
की एक बड़ी आवश्यकता है।

बच्चा! कोई भी बन्धन, कोई भी

करते हैं और जिन्हें वे सबसे अधिक प्यार करते हैं।

❖ ❖

क्या हम संसार का भला कर सकते हैं? निरपेक्ष दृष्टि से—'नहीं', सापेक्ष दृष्टि से—'हाँ'।

❖ ❖

आओ भाइयो, हम सब सतत कार्य में लगे रहें, यह सोने का समय नहीं। हमारे कार्य पर भारत का भविष्य निर्भर है। हमारी भारतमाता तैयार है—बस बाट जोह रही है। उसे केवल तन्द्रा भर आ गई है। उठो, जागो और देखो अपनी इस मातृभूमि को—वह किस प्रकार पुन. नवशक्ति-सम्पन्न हो, पहले से भी अधिक गौरवान्वित हो अपने शाश्वत सिंहासन पर विराजमान है।

❖ ❖

जो शिव की सेवा करना चाहता है, उसे पहले उनकी सन्तानों की—इस संसार के सारे जीवों की सेवा करनी चाहिए। शास्त्रों में कहा है कि जो

जो दाग लगा देती है, आओ, पहले हम उसे धो डाले। किसी से ईर्ष्या मत करो। भले कार्यो में रत प्रत्येक व्यक्ति से हाथ बटाने को तैयार रहो। इस विश्व-ब्रह्माण्ड के प्रत्येक जीव के लिए शुभ विचार भेजो।

❖ ❖

'सागर' की ओर देखो, 'तरंग' की ओर नहीं, चींटी और देवता मे कोई भेद न देखो। प्रत्येक कीड़ा भी ईसा मसीह का भाई है। एक को उच्च और दूसरे को नीच कैसे कहते हो? अपने स्थान में हर एक बड़ा है।

❖ ❖

अब तुम्हें महावीर के जीवन को अपना आदर्श बनाना होगा। देखो, वे कैसे रामचन्द्र की आज्ञा मात्र से विशाल सागर को लाँघ गए! उन्हें जीवन या मृत्यु से कोई नाता न था। वे सम्पूर्ण रूप से इन्द्रियजित् थे और उनकी प्रतिभा अद्भुत थी। अब तुम्हें अपना जीवन दास्य-भक्ति के इस महान् आदर्श

होते हैं, जिन्होंने बिना किसी प्रकार जाति, धर्म व सम्प्रदाय का विचार किए, एक दीन-हीन के लिए काम करते हुए उसकी सेवा और सहायता की है।

◇

'न बुद्धिभेदं जनयेत्'—किसी की श्रद्धा को डाँवाडोल करने का प्रयत्न मत करो। यदि हो सके, तो उसे कुछ उच्चतर भाव दो, यदि हो सके, तो जहाँ पर वह खड़ा है, वहीं से उसे ऊपर उठाने का प्रयत्न करो, पर देखना, उसका भाव कहीं नष्ट न कर देना।

◇

यदि हम अपनी प्रार्थना में कहें कि भगवान ही हम सबके पिता हैं, और अपने दैनिक जीवन में प्रत्येक मनुष्य को अपना भाई न समझें, तो फिर उसकी सार्थकता ही क्या ?

◇

प्रकृति सदैव गुलाम के मस्तक पर ईर्ष्या का

आत्म-संयम

यह जान लो कि किसी की अनुपस्थिति में उसकी निन्दा करना पाप है। तुम्हें पूरी तरह इससे बचना चाहिए। मन में सैकड़ों बातें आ सकती हैं, पर यदि तुम उन्हें व्यक्त करते रहो, तो फिर उससे तिल का ताड़ बन जाता है। यदि तुम क्षमा कर दो और भूल जाओ, तो बात वहीं पर अन्त हो जाती है।

❖ ❖

यदि कोई तुमसे व्यर्थ विवाद करने आए, तो नम्रता के साथ अपने को अलग कर लेना। तुम्हें सभी सम्प्रदाय के लोगों के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट करनी चाहिए। जब तुममें ये प्रधान गुण आ जायेंगे, तभी तुम प्रबल उत्साह के साथ कार्य कर सकोगे।

❖ ❖

गम्भीरता और बालकवत् सरलता का आपस

पर खड़ा करना होगा। उसके माध्यम से, क्रमशः अन्य सारे आदर्श जीवन में प्रकाशित होंगे। गुरु के श्रीचरणों में सर्वतोभावेन आत्मसमर्पण और अटूट ब्रह्मचर्य—बस यही सफलता का रहस्य है। हनुमान एक ओर जिस प्रकार सेवादर्श के प्रतीक है, उसी प्रकार दूसरी ओर सिंह-विक्रम के भी प्रतीक हैं—सारा संसार उनके सम्मुख श्रद्धा और भय से सिर झुकाता है।

यदि कोई तुम्हारे पास किसी की बुराई करने आए, तो तुम उसे सुनना ही नहीं। सुनना सब महापाप है। उसी में भावी विपत्तियों का बीज निहित रहता है। फिर, सबकी कमियों को सहन करो। यदि हजार-हजार अपराध भी हों, तो भी क्षमा कर दो।

❖ ❖

यदि मैं अतीन्द्रिय आनन्द न पाऊँ, तो क्या इन्द्रिय-सुखों के पीछे दौड़ूँगा? यदि मैं अमृत न पा सका, तो क्या गड्ढे के पानी से ही सन्तोष कर लूँगा?

❖ ❖

सुख अपने सिर पर दुःख का मुकुट पहने मनुष्य के सम्मुख आता है। जो उसको अपनाएगा, उसे दुःख को भी अपनाना पड़ेगा।

❖ ❖

मनुष्य भले ही राजनीतिक और सामाजिक

में योग करो। सबके साथ एक होकर रहो। अहंकार की समस्त भावना त्याग दो और किसी प्रकार की मतान्धता या साम्प्रदायिकता न पोसो। व्यर्थ की बकवास और लड़ाई-झगड़ा महापाप है।

❖ ❖

निराशा धर्म तो नहीं है—वह और चाहे जो कुछ हो। सर्वदा प्रसन्न और हँसमुख रहना तुम्हें ईश्वर के अधिक निकट ले जायगा—किसी प्रार्थना की भी अपेक्षा अधिक निकट।

❖ ❖

जीवात्मा का निवासस्थान यह शरीर कार्य का सबसे उपयुक्त यन्त्र है। जो इसे एक अन्धकूप में परिणत कर डालता है, वह अपराधी है, और जो इसकी उपेक्षा करता है, वह भी निन्दनीय है।

❖ ❖

सिद्धि-चमत्कार आदि के पीछे मत पड़ो, यहाँ तक कि ऐसी बातों को पैर तक से मत छूना।

❖ ❖

षों की चर्चा करके तुम कभी उसका उपकार करते, बल्कि तुम उसे चोट ही पहुँचाते हो साथ ही अपने आपको भी।

❖ ❖

जो ठीक ढंग से चिलम भर सकता है, वह क-ठीक ध्यान भी कर सकता है।

❖ ❖

जिसने अपने ऊपर संयम कर लिया है, वह बाहर की किसी भी वस्तु द्वारा प्रभावित नहीं किया जा सकता। उसके लिए गुलामी फिर और नहीं रह जाती। उसका मन मुक्त हो गया है, केवल ऐसा व्यक्ति ही संसार में सुख से रहने योग्य है।

❖ ❖

हम जितना ही शान्त होंगे, हमारे स्नायु जितने ही कम उत्तेजित होंगे, हम उतना ही अधिक प्रेम कर सकेंगे और हमारा कार्य उतना ही अधिक अच्छा होगा।

❖ ❖

तुम्हें स्वामी की भाँति कार्य करना चाहिए, न कि दास की तरह; अविराम कर्म करो, पर दास की तरह नही।

❖ ❖

'अनासक्त' होओ; शरीर कार्य करे; इन्द्रियाँ काम करें; अविराम कर्म करो, पर एक लहर भी मन पर अधिकार न जमाने पाए। इस ढग से काम करो, मानो तुम इस दुनिया में एक विदेशी हो, एक यात्री हो। सतत काम करो, पर अपने को बन्धन में न जकड़ लेना, बन्धन बड़ा भयानक है।

❖ ❖

सब प्रकार से निष्क्रियता से बचे रहना चाहिए। क्रियाशीलता का अर्थ ही है—प्रतिकार। मानसिक और भौतिक सब प्रकार की बुराइयो का प्रतिकार करो; और जब तुम इस प्रतिकार में सफल हो जाओगे, तभी शान्ति आयगी।

❖ ❖

जो व्यक्ति अपने आपसे घृणा करने लगा है, उसके पतन के द्वार खुल गए हैं; और ठीक यही बात राष्ट्र के सम्बन्ध में भी है। हमारा पहला कर्तव्य है—अपने आपसे घृणा न करना; क्योंकि उन्नत होने के लिए हमें पहले अपने आपमें विश्वास लाना होगा, और फिर ईश्वर में।

° °

यदि भारत में इस समय सबसे बड़ा कोई पाप है, तो वह है यह गुलामी। हर एक हुकूमत करना चाहता है, खिदमत करना कोई नहीं चाहता; और इसका कारण है—पुराकाल की उस अद्भुत ब्रह्मचर्य-प्रणाली का अभाव। पहले खिदमत करना सीखो। फिर हुकूमत अपने आप आ जायगी। पहले सदैव भृत्य बनना ही सीखो, तभी तुम स्वामी बनने योग्य होगे।

° °

जो-जो विचार एवं कार्य आत्मा की पवित्रता

और शक्ति को संकुचित कर देते हैं, वे बुरे विचार हैं, बुरे कार्य हैं, और जो विचार तथा कार्य आत्म की अभिव्यक्ति में सहायक होते हैं एवं उसकी शक्ति को मानो प्रकाशित कर देते हैं, वे अच्छे हैं नीतिपर हैं।

❖ ❖

असंयत और निरंकुश मन हमें नीचे खींच ले जायगा, हमें सदा के लिए नष्ट कर देगा। और यदि हमारा मन संयत तथा नियन्त्रित रहे, तो वह हमें बचा लेगा, हमें मुक्त कर देगा।

❖ ❖

प्रकृति के साथ मेल का अर्थ है जीवन-प्रवाह का अवरुद्ध हो जाना—मृत्यु। मनुष्य ने यह इमारत कैसे खड़ी की? क्या प्रकृति के साथ मेल-पूर्वक? नहीं, प्रकृति के विरुद्ध युद्ध करके। प्रकृति के विरुद्ध सतत संघर्ष से ही मानव-प्रगति पनपती है, न कि प्रकृति के साथ मेल से।

❖ ❖

अन्धकार को चीर अभय हो—
बढ़ो साहसी ! जग-विजयी हो।

❖ ❖

हमारा सबसे उत्तम कार्य तब होता है, हमारा सबसे अधिक प्रभाव तब पड़ता है, जब हममें स्वार्थ-भावना नहीं रहती। पूर्णरूपेण निरपेक्ष हो जाओ, सम्पूर्णतः उदासीन हो जाओ; तभी तुम यथार्थ कार्य कर सकते हो।

❖ ❖

अपवित्र भावना उतनी ही बुरी है, जितना अपवित्र कार्य। सयत कामना से उच्चतम फल प्राप्त होता है।

❖ ❖

भले और बुरे दोनों प्रकार के कार्यों को निकाल फेंको, और फिर उनकी चिन्ता तक न करो। जो हो गया, सो हो गया। कुसंस्कार और अन्ध-

विश्वास समूल निकाल डालो। मृत्यु के मुख में भी कमजोरी को स्थान न देना। पछताओ मत, अतीत कर्मों पर सोच मत करो और अपने भले कार्यों की भी बात मन में न लाओ, 'आजाद' होओ।

◇ ◇

संसार चाहता है चरित्र। संसार को आज ऐसे लोगों की आवश्यकता है, जिनके हृदय में नि:स्वार्थ प्रेम प्रज्वलित हो रहा है। उस प्रेम से प्रत्येक शब्द का वज्रवत् प्रभाव पड़ेगा। जागो, जागो, ऐ महान् आत्माओ, जागो! संसार दुःखाग्नि से जला जा रहा है। क्या तुम सोए रह सकते हो?

◇ ◇

जैसे-जैसे मैं बड़ा होता जा रहा हूँ, मैं देखता हूँ कि मेरी दृष्टि अधिकाधिक छोटी बातों में निहित महानता की ओर जा रही है। मैं जानना चाहता हूँ कि एक महान् व्यक्ति क्या खाता है, क्या पहनता है, वह अपने नौकरों के साथ किस तरह बातें करता

है। मैं देखना चाहता हूँ सर फिलिप सिडनी * की महानता ! मृत्यु के मुख में भी दूसरों के दुःख-दर्द की बात सोचनेवाले बहुत कम होंगे। बड़े पद पर आने से तो कोई भी बड़ा हो सकता है! एक कायर भी रंगमंच के चकाचौंध प्रकाश में साहसी

* अँगरेज कवि, कुशल राजनीतिज्ञ और सेनापति। जुटफेन की लड़ाई में जाँघ में सांघातिक गोली लगने के कारण वे बुरी तरह घायल हो गए। उनके जाँघ से खून की धारा बह चली। अधिक रक्त बह जाने के कारण उनके ओठ सूखने लगे और उन्हें बड़े जोर की प्यास लगने लगी। उन्होंने पानी माँगा। पानी शीघ्र ही ला दिया गया। पानी के पात्र को वे मुँह से लगाने ही वाले थे कि उनकी एक घायल सैनिक पर पड़ी, जो जीवन की अन्तिम घ गिन रहा था और सतृष्ण नयनों से पानी के उस पा ओर देख रहा था। यह देखते ही सर फिलिप ने उस को अपने मुँह से हटा लिया और उसे उस सैनिक को ते हुए कहा, "तेरी आवश्यकता मुझसे कहीं अधिक है। के कुछ ही दिन बाद सर फिलिप की मृत्यु हो गई।

बन जायगा। संसार देख रहा है—फिर भला किसका हृदय स्पन्दित न होगा? किसकी धमनियों में रक्त जोरों से प्रवाहित न होगा, जब तक कि वह यथाशक्ति अपना कर्तव्य न कर ले? पर मुझे तो, अधिकाधिक, सच्ची महानता उस कीड़े में दिख रही है, जो अपना कर्तव्य चुपचाप, धीर भाव से मिनट-पर-मिनट और घंटे-पर-घंटे करता जाता है।

त्याग

महान् कार्य महान् त्याग से ही सम्पन्न हो सकते हैं।

❖ ❖

'सार्वभौमिकता'—इस एक भाव के लिए यदि सब कुछ त्याग देने की आवश्यकता हो, तो भी पीछे न हटो।

❖ ❖

दूसरो की मुक्ति के लिए यदि तुम्हे नरक मे भी जाना पड़े, तो सहर्ष जाओ। धरती पर ऐसी कोई मुक्ति नही, जिसे मैं अपना कह सकूँ।

❖ ❖

मुक्ति उसी के लिए है, जो दूसरों के लिए सब कुछ त्याग देता है। और दूसरे, जो दिन-रात 'मेरी मुक्ति, मेरी मुक्ति' कहकर माथापच्ची करते रहते हैं, वे वर्तमान और भविष्य में होनेवाले अपने

सच्चे कल्याण की सम्भावना को नष्ट कर यत्र-तत्र भटकते फिरते हैं। मैंने स्वय अपनी आँखों ऐसा अनेक बार देखा है।

❖ ❖

कुछ मत माँगो, बदले में कुछ मत चाहो। तुम्हें जो देना है, दे दो, वह तुम्हारे पास लौटकर आयगा—पर अभी उसकी बात मत सोचो। वह वर्धित होकर—सहस्रगुना वर्धित होकर वापस आयगा—पर ध्यान उधर न जाना चाहिए। तुममे केवल देने की शक्ति है। दे दो, बस बात वही पर खतम हो जाती है।

❖ ❖

दान से बड़ा धर्म और नहीं। सबसे नीच मनुष्य वह है, जिसके हाथ लेने को फैल जाते हैं; और सर्वोच्च व्यक्ति वह है, जिसके हाथ देने को बढ़ जाते हैं। हाथ सदैव देने के लिए ही बनाए गए थे। यदि तुम भूखे भी मर रहे हो, तो भी अपने

पास का बचा हुआ रोटी का आखिरी टुकड़ा दे दो। यदि तुम दूसरे को देकर स्वयं भूखे मर जाओ, तो तुम उसी क्षण मुक्त हो जाओगे। तत्क्षण तुम पूर्ण हो जाओगे, देवता बन जाओगे।

❖ ❖

नाम की कौन परवाह करता है? त्याग दो उसे! यदि भूखो के मुँह मे अन्न का कौर पहुँचाने के प्रयास मे नाम, सम्पत्ति, यहाँ तक कि, सर्वस्व भी स्वाहा हो जाय, तो तुम त्रिवार धन्य हो! हृदय ही विजयी होता है, मस्तिष्क नही। पुस्तके और पाण्डित्य, योग, ध्यान और ज्ञान—ये सब तो प्रेम की तुलना मे धूल के बराबर है।

❖ ❖

भारत को कम-से-कम अपने सहस्र तरुण मनुष्यों की बलि की आवश्यकता है; पर ध्यान दो—'मनुष्यों' की, 'पशुओं' की नही।

❖ ❖

किसी धार्मिक सम्प्रदाय का पतन उसी दिन से आरम्भ हो जाता है, जिस दिन से उसमें धनिकों की उपासना पैठ जाती है।

❖ ❖

सार बात है—त्याग। त्याग के बिना कोई भी पूरे हृदय से दूसरों के लिए कार्य नहीं कर सकता। त्यागी पुरुष सबको समदृष्टि से देखता है—तब फिर तुम अपने मन में यह भावना क्यों पोसते हो कि स्त्री-पुत्र दूसरों की अपेक्षा तुम्हारे अधिक अपने हैं? तुम्हारे दरवाजे पर साक्षात् नारायण एक दीन भिखारी के रूप में भूखों मर रहा है। उसको कुछ न देकर क्या तुम केवल अपनी स्त्री और बच्चों की चटोरी रसना की तृप्ति में ही लगे रहोगे? क्यों, यह तो पाशविक है!

❖ ❖

स्वार्थपरता ही अनीति है और निःस्वार्थ-परता नीति।

❖ ❖

करो। सब कुछ दे डालो और बदले की कोई चाह न रखो। प्रेम दो, सहायता दो, सेवा अर्पित करो, जो कुछ थोड़ा तुमसे बन सकता है वही दो, पर 'दूकानदारी के भाव से बचे रहो'। न कोई शर्त रखो और न किसी पर दबाव डालो। जिस प्रकार भगवान हमें स्वेच्छा से देते हैं, उसी प्रकार हम भी स्वेच्छा से दें।

देखना, यही अपनी श्रद्धा मन में बैठना। गुरुजनों के प्रति आज्ञाकारी हुए बिना केन्द्रीकरण असम्भव है। और बिना इन अलग-अलग शक्तियों के केन्द्रीकरण के, कोई भी महान् कार्य नहीं हो सकता।

◆ ◆

तुममें से प्रत्येक को महान् होना होगा—'होना ही होगा' यही मेरी टेक है। यदि तुममें आदर्श के लिए आज्ञापालन, तत्परता और प्रेम—ये तीन बातें रहें, तो तुम्हें कोई रोक नहीं सकता।

◆ ◆

लोहे के गरम रहते उस पर चोट करो। आलस्य से काम नहीं होने का। ईर्ष्या और अहंकार की समस्त भावना सदा के लिए दूर कर दो। आओ, अपनी सारी शक्ति के साथ कार्य करने के लिए कर्मक्षेत्र में उतर आओ। शेष सबके लिए श्रीभगवान हमें मार्ग बता देंगे।

◆ ◆

उतावलेपन से कुछ नहीं होने का। सफलता के लिए ये तीन बातें अनिवार्य हैं—पवित्रता, धैर्य और अध्यवसाय, और सर्वोपरि चाहिए प्रेम। अनन्त काल तुम्हारे सामने है, इस उतावलेपन की कोई आवश्यकता नहीं।

❖ ❖

प्रत्येक राष्ट्र के इतिहास में तुम सदैव देखोगे कि वे ही व्यक्ति महान् और शक्तिशाली बने जिन्हें अपने आपमें विश्वास था।

❖ ❖

यदि सब लोग एक दिन एक क्षण के लिए भी यह समझ जायें कि इच्छा मात्र से ही कोई बड़ा नहीं बन जाता, वरन् सब कुछ भगवान की इच्छा से होता है—वही ऊपर उठता है, जिसे वे भगवान उठाते हैं, वही नीचे गिरता है, जिसे वे गिराते हैं—तो सारा दुःख-कष्ट चला जाय। पर अहंकार जो है—वह खोखला अहंकार, जिसमें उँगली हिलाने तक की

सामर्थ्य नहीं—कितना हास्यास्पद है उसका यह कहना कि 'मैं किसी को ऊपर न उठने दूँगा!' यह ईर्ष्या, यह एक होकर कार्य करने की शक्ति का अभाव, गुलाम राष्ट्रों के स्वभाव में ही भिद गया है। पर हमें उसे झटककर दूर फेंक देना चाहिए।

❖ ❖

छोटी बातों की महानता—बस यही गीता की शिक्षा है। गीता की जय हो!

❖ ❖

मृत व्यक्ति फिर से नहीं जीता; बीती हुई रात फिर से नहीं आती, नदी की उतरी बाढ़ फिर से नहीं लौटती, जीवात्मा दो बार एक ही देह धारण नहीं करता। अतः हे मनुष्यो, मुर्दे की पूजा करने के बदले हम तुम्हे जीवित की पूजा के लिए पुकारते है; बीती हुई बातो पर माथापच्ची करने के बदले हम तुम्हे प्रस्तुत प्रयत्न के लिए बुलाते हैं; मिटे हुए मार्ग के खोजने में वृथा शक्ति-क्षय करने के

वरन् अभी बनाए हुए प्रशस्त और सन्निकट पथ पर चलने के लिए आह्वान करते हैं। बुद्धिमान, समझ लो!

❖ ❖

एक बार फिर से अपने में सच्ची श्रद्धा की भावना लानी होगी, आत्मविश्वास को पुन जगाना होगा, तभी हम उन सारी समस्याओं को धीरे-धीरे सुलझा सकेंगे, जो आज हमारे देश के सामने हैं।

❖ ❖

तुम थोड़ीसी परिमार्जित भाषा में बात कर सकते हो और बस इसलिए सोचते हो कि तुम साधारण जन से ऊँचे हो! और सर्वोपरि, यदि कहीं तुममें आध्यात्मिकता का घमड घुस गया, तब तो धिक्कार है तुम्हें! वह तो सबसे भयकर बन्धन है।

❖ ❖

मुझे कठोपनिषद् के उस उदात्त भाव-व्यजक शब्द का स्मरण आता है—'श्रद्धा' अर्थात् विश्वास।

इस 'श्रद्धा' की शिक्षा का प्रचार करना ही मेरे जीवन का ध्येय है। मुझे एक बार फिर कहने दो—यह श्रद्धा ही सारी मानवता का—सारे धर्मों का एक महा सामर्थ्यवान अंग है। पहले स्वयं निज के प्रति श्रद्धावान होओ। धनिकों और पैसेवाले बड़े लोगों की ओर आशा-भरी दृष्टि से मत देखो। दुनिया में जितने भी बड़े-बड़े काम हुए हैं, सब गरीबों ने किए हैं। स्थिर भाव से श्रद्धा के साथ कार्य किए जाओ, और सर्वोपरि, पवित्र और धुन के पक्के बनो। लक्ष्य की प्राप्ति होगी ही।

❖ ❖

हमारे राष्ट्र के रक्त में एक भयंकर रोग संक्रामित होता जा रहा है और वह है—हर एक बात की खिल्ली उड़ाना, गम्भीरता का अभाव। उसे दूर कर दो। बलवान बनो और इस श्रद्धा को अपनाओ, देखोगे, शेष सब वस्तुएँ अपने आप ही आने लगेंगी।

❖ ❖

यह न सोचो कि तुम दरिद्र हो, तुम्हारा कोई साथी नहीं है। अरे, क्या कभी किसी ने पैसे को मनुष्य बनाते देखा है? सदैव मनुष्य ही पैसा बनाता है। यह सारी दुनिया तो मनुष्य की शक्ति से, उत्साह के बल से, श्रद्धा के बल से ही बनी है।

❖ ❖

मै चाहता हूँ कट्टर व्यक्ति की तीव्रता के साथ जड़वादी की उदारता का योग। सागर के समान गम्भीर और अनन्त आकाश के समान उदार—बस ऐसा ही हृदय हमे चाहिए।

❖ ❖

उन पुराने तर्क-वितर्कों को—अर्थहीन विषयो पर छिडी हुई पुरानी लडाइयो को त्याग दो। गत छः-सात सदियो तक के लगातार पतन पर विचार करो—जब कि पुख्ता दिमागवाले सैकडो आदमी बस इसी विषय को लेकर वर्षों तर्क करते रह गए कि लोटा-भर पानी दाहिने हाथ से पिया जाय या बाएँ

इस 'श्रद्धा' की शिक्षा का प्रचार करना ही मेरे जीवन का ध्येय है। मुझे एक बार फिर कहने दो—यह श्रद्धा ही सारी मानवता का—सारे धर्मों का एक महा सामर्थ्यवान अंग है। पहले स्वयं निज के प्रति श्रद्धावान होओ। धनिकों और पैसेवाले बड़े लोगों की ओर आशा-भरी दृष्टि से मत देखो। दुनिया मे जितने भी बड़े-बड़े काम हुए हैं, सब गरीबों ने किए हैं। स्थिर भाव से श्रद्धा के साथ कार्य किए जाओ, और सर्वोपरि, पवित्र और धुन के पक्के बनो। लक्ष्य की प्राप्ति होगी ही।

❖ ❖

हमारे राष्ट्र के रक्त में एक भयंकर रोग संक्रामित होता जा रहा है और वह है—हर एक बात की खिल्ली उड़ाना, गम्भीरता का अभाव। उसे दूर कर दो। बलवान बनो और इस श्रद्धा को अपनाओ, देखोगे, शेष सब वस्तुएँ अपने आप ही आने लगेंगी।

❖ ❖

यह न सोचो कि तुम दरिद्र हो, तुम्हारा कोई साथी नहीं है। अरे, क्या कभी किसी ने पैसे को मनुष्य बनाते देखा है? सदैव मनुष्य ही पैसा बनाता है। यह सारी दुनिया तो मनुष्य की शक्ति से, उत्साह के बल से, श्रद्धा के बल से ही बनी है।

❖ ❖

मैं चाहता हूँ कट्टर व्यक्ति की तीव्रता के साथ जड़वादी की उदारता का योग। सागर के समान गम्भीर और अनन्त आकाश के समान उदार—बस ऐसा ही हृदय हमें चाहिए।

❖ ❖

उन पुराने तर्क-वितर्कों को—अर्थहीन विषयों पर छिड़ी हुई पुरानी लड़ाइयों को त्याग दो। गत छः-सात सदियों तक के लगातार पतन पर विचार करो—जब कि पुख्ता दिमागवाले सैकड़ों आदमी बस इसी विषय को लेकर वर्षों तर्क करते रह गए कि लोटा-भर पानी दाहिने हाथ से पिया जाय या बाएँ

हाथ से; हाथ तीन बार धोए जायँ या चार बार, अथवा कुल्ला पाँच बार करना ठीक है या छः बार। ऐसे व्यर्थ प्रश्नों के लिए तर्क पर तुले हुए जिन्दगी-की-जिन्दगी पार कर देनेवाले और इन विषयों पर अत्यन्त गवेषणापूर्ण दर्शन लिख डालनेवाले पण्डितो से और क्या आशा कर सकते हो! हमारे धर्म के लिए भय यही है कि अब वह कहीं रसोई-घर में ही आबद्ध न हो जाय। हममें से अधिकांश इस समय न तो वैदान्तिक हैं, न पौराणिक और न तान्त्रिक; हम हैं 'छूतधर्मी'—'हमें न छुओ'-धर्म के माननेवाले। हमारा धर्म है रसोई-घर मे, हमारा ईश्वर है 'भात की हण्डी' और मन्त्र है 'हमें न छुओ, हमें न छुओ, हम महा पवित्र हैं'। अगर यही भाव एक शताब्दी और चला, तो हममें से हर एक की हालत पागलखाने में कैद होने लायक हो जायगी।

❖ ❖

तुममें अपने आदर्श के प्रति [illegible]

चाहिए—क्षणिक निष्ठा नहीं; उस चातक के समान शान्त, धीरजयुक्त, अचल निष्ठा, जो बादलों की गरज और बिजली की चमक के बावजूद भी आकाश की ओर टकटकी लगाए देखता रहता है तथा स्वाति के जल के अतिरिक्त और कोई जल नही चाहता।

❖ ❖

पवित्र बनने के प्रयास में यदि मर भी जाओ, तो क्या, सहस्र बार मृत्यु का स्वागत करो। हृदय न खोना। यदि अमृत न मिले, तो यह कोई कारण नहीं कि हम विष खा लें।

❖ ❖

धर्म को लेकर कभी विवाद न करो। धर्म सम्बन्धी सारे विवाद और झगडे केवल यही दर्शाते हैं कि वहाँ आध्यात्मिकता का अभाव है। धर्म सम्बन्धी झगड़े सदैव खोखली और असार बातो पर ही होते हैं। जब पवित्रता—आध्यात्मिकता—आत्मा को शुष्क छोड़कर चली जाती है, तभी झगडे-विवाद

चाहिए—क्षणिक निष्ठा नहीं, उस चातक के समान शान्त, धीरजयुक्त, अचल निष्ठा, जो बादलों की गरज और बिजली की चमक के बावजूद भी आकाश की ओर टकटकी लगाए देखता रहता है तथा स्वाति के जल के अतिरिक्त और कोई जल नहीं चाहता।

❖ ❖

पवित्र बनने के प्रयास में यदि मर भी जाओ, तो क्या, सहस्र बार मृत्यु का स्वागत करो। हृदय न खोना। यदि अमृत न मिले, तो यह कोई कारण नहीं कि हम विष खा लें।

❖ ❖

धर्म को लेकर कभी विवाद न करो। धर्म सम्बन्धी सारे विवाद और झगड़े केवल यही दर्शाते हैं कि वहाँ आध्यात्मिकता का अभाव है। धर्म सम्बन्धी झगड़े सदैव खोखली और असार बातों पर ही होते हैं। जब पवित्रता—आध्यात्मिकता—आत्मा को शुष्क छोड़कर चली जाती है, तभी झगड़े-विवाद

आरम्भ होते है, उसके पूर्व नही।

❖ ❖

सिद्धान्त, मतवाद, सम्प्रदाय, गिरजा या मन्दिर की परवाह न करो, ये सब तो मनुष्य की अन्त.स्थ सत्ता की तुलना मे नगण्य है। यह सत्ता है—आध्यात्मिकता, और जितना ही मनुष्य मे इसका विकास किया जायगा, उसकी शुभ की शक्ति उतनी ही बढती जायगी। पहले उसकी प्राप्ति करो, उसको हासिल करो। किसी की निन्दा मत करो, क्योकि सभी सिद्धान्तो और मतवादो मे कुछ-न-कुछ अच्छाई है। अपने जीवन से यह दर्शा दो कि धर्म का मतलब कुछ शब्द, नाम या सम्प्रदाय नही है, वरन् उसका तात्पर्य है आध्यात्मिक अनुभूति।

❖ ❖

धारणा की दृढता और उद्देश की पवित्रता—ये दोनो मिलकर अवश्य बाजी मार ले जायँगी। और यदि एक मुट्ठी-भर लोग इन दो शस्त्रो से

सुसज्जित रहे, तो वे निश्चित ही समस्त विघ्न-बाधाओं का सामना कर अन्त में विजय प्राप्त कर लेंगे।

❖ ❖

यदि किसी व्यक्ति में सत्य, पवित्रता और निःस्वार्थता — ये तीन बातें विद्यमान हैं, तो इस ब्रह्माण्ड में ऐसी कोई ताकत नहीं, जो उसका बाल भी बाँका कर सके। इन तीनों से सज्जित रहने पर मनुष्य सारे जगत् का सामना कर सकता है।

❖ ❖

'उत्तिष्ठत, जाग्रत, प्राप्य वरान्निबोधत'— उठो! जागो! और जब तक ध्येय की प्राप्ति नहीं हो जाती, तब तक रुको मत!

भारत को आह्वान

ऐ भारत ! भूलना नहीं कि तुम्हारी स्त्रियों का आदर्श सीता, सावित्री, दमयन्ती है; भूलना नहीं कि तुम्हारे उपास्य सर्वत्यागी उमानाथ शंकर है; भूलना नही कि तुम्हारा विवाह, तुम्हारा धन और तुम्हारा जीवन इन्द्रिय-सुख, अपने व्यक्तिगत सुख के लिए नही है; भूलना नही कि तुम जन्म से ही 'माता' के लिए बलिस्वरूप रखे गए हो; भूलना नहीं कि तुम्हारा समाज उस महामाया की छाया मात्र है; भूलना नहीं कि नीच, अज्ञानी, दरिद्र, चमार और मेहतर तुम्हारे रक्त-मांस है, तुम्हारे भाई है। ऐ वीर ! साहस का अवलम्बन करो। गर्व से बोलो कि मैं भारतवासी हूँ और प्रत्येक भारतवासी मेरा भाई है। तुम चिल्लाकर कहो कि अज्ञानी भारतवासी, दरिद्र भारतवासी, ब्राह्मण भारतवासी, चाण्डाल भारतवासी सब मेरे

भाई है। तुम भी केवल कौपीन धारण कर गर्व से पुकारकर कहो कि भारतवासी मेरा भाई है, भारतवासी मेरे प्राण हैं, भारत की देव-देवियाँ मेरे ईश्वर हैं, भारत का समाज मेरे बचपन का झूला, जवानी की फुलवारी और बुढ़ापे की काशी है। भाई, बोलो कि भारत की मिट्टी मेरा स्वर्ग है, भारत के कल्याण में मेरा कल्याण है, और रात-दिन कहते रहो — "हे गौरीनाथ! हे जगदम्बे! मुझे मनुष्यत्व दो। माँ, मेरी दुर्बलता और कापुरुषता दूर कर दो — माँ, मुझे मनुष्य बना दो!"

❖ ❖

ऐ भारत! यही तेरे लिए एक भयानक खतरे की बात है—तुझमें पाश्चात्य जातियों की नकल करने की इच्छा ऐसी प्रबल होती जा रही है कि भले-बुरे का निश्चय अब विचार-बुद्धि, शास्त्र या हिताहित-ज्ञान से नहीं किया जाता। गोरे लोग जिस भाव और आचार की प्रशंसा करें, वही अच्छा है

और वे जिसकी निन्दा करें, वही बुरा! खेद है, इससे बढ़कर मूर्खता का परिचय भला और क्या होगा?

❖ ❖

यह सदैव ध्यान रखना कि दुनिया में ऐसा अन्य कोई देश नहीं है, जहाँ की संस्थाएँ अपने ध्येय और आदर्श मे इस देश की सस्थाओ से सचमुच अच्छी हो। मैंने संसार के प्रायः सभी देशो में जाति-प्रथा देखी है, पर कहीं भी उसकी पृष्ठभूमि और उसके उद्देश्य इतने महान् नहीं है, जितने कि यहाँ। यदि सचमुच जाति-प्रथा अनिवार्य हो, तो मैं तो 'डालर' पर आधारित जाति के बदले पवित्रता, सस्कृति और आत्म-त्याग पर आधारित जाति को ही पसन्द करूँगा। अतएव मुख से कोई निन्दा के शब्द न निकालो। मुँह बन्द कर लो और खोल दो हृदय के कपाट। इस देश की और सारे संसार की मुक्ति के लिए जी-जान से जुट जाओ—तुममें से प्रत्येक

ह भावना रखते हुए कि उसी के कन्धों पर यह
ारा भार है। वेदान्त के प्रकाश को—वेदान्त के
त्त्वों को द्वार-द्वार पर ले जाओ और प्रत्येक आत्मा
निहित ब्रह्मभाव को उद्बुद्ध कर दो। फिर
ुम्हारी सफलता की मात्रा चाहे जितनी हो, पर
ुम्हारे हृदय में यह सन्तोष बना रहेगा कि तुम एक
महान् आदर्श को लेकर रहे, उसके लिए प्राणपण से
चेष्टा की और अपने जीवन की बलि दे दी। इस
आदर्श की पूर्णता में ही—फिर वह चाहे जिस
प्रकार साधित हो—सारी मानवजाति की मुक्ति
केन्द्रित है।

भारत को सामाजिक अथवा राजनीतिक विचारों से प्लावित करने के पहले यह आवश्यक है कि उसमें आध्यात्मिक विचारों की बाढ़ ला दी जाय। सर्वप्रथम, हमारे उपनिषदों, पुराणों और अन्य सब शास्त्रों में जो अपूर्व सत्य निहित हैं, उन्हें,

इन सब ग्रन्थों के पृष्ठों से बाहर लाकर, मठों की चहारदीवारियाँ भेदकर, वनों की नीरवता से दूर लाकर, कुछ सम्प्रदाय-विशेषों के हाथों से छीनकर देश में सर्वत्र बिखेर देना होगा, ताकि ये सत्य दावानल के समान सारे देश को चारों ओर से लपेट लें—उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक सब जगह फैल जायें—हिमालय से कन्याकुमारी और सिन्धु से ब्रह्मपुत्रा तक सर्वत्र वे धधक उठें।

❖ ❖

क्या भारत मृत्यु को प्राप्त होगा? तब तो दुनिया से सारी आध्यात्मिकता चली जायगी; सारी नैतिक पूर्णता नष्ट हो जायगी; धर्म के प्रति सारी मधुर सहानुभूति लुप्त हो जायगी; आदर्श के प्रति सारा प्रेम गायब हो जायगा; और उसके स्थान पर विलासिता और कामरूपी देवी-देवता आधिपत्य कर लेंगे, जहाँ धन पुरोहित होगा, छल-कपट, जोर-जबरदस्ती और प्रतियोगिता उसके विधि-अनुष्ठान

गे और मानवात्मा उसकी बलि होगी। पर ऐसा कभी नहीं हो सकता। कष्ट सहने की शक्ति, कार्य करने की शक्ति की अपेक्षा अनन्तगुनी श्रेष्ठ है, प्रेम की शक्ति, घृणा की शक्ति की अपेक्षा अनन्तगुनी अधिक प्रभावशाली है।

❖ ❖

प्रत्येक आत्मा अव्यक्त ब्रह्म है। बाह्य एवं अन्तःप्रकृति को वशीभूत करके इस अन्तःस्थ ब्रह्मभाव को व्यक्त करना ही जीवन का लक्ष्य है।

कर्म, उपासना, मनःसंयम अथवा ज्ञान—इनमें से एक अथवा एक से अधिक या सभी उपायों का सहारा लेकर अपना ब्रह्मभाव व्यक्त करो और मुक्त हो जाओ।

बस यही धर्म का सर्वस्व है। मत, अनुष्ठान-पद्धति, शास्त्र, मन्दिर अथवा अन्य बाह्य क्रिया-कलाप तो उसके गौण अंग-प्रत्यंग मात्र हैं।

छन्दों में उपदेश

भले क्षीण हो नेत्र-ज्योति यह,
हृत्कम्पन हो धीमा।
भले मित्र हो शत्रु, प्रेम भी
छलना की हो सीमा।
भले भाग्य भेजे जीवन में—
अभिशापों की आँधी।
जान न पाए किसने तम में—
राह हमारी बाँधी।
भले प्रकृति निज भौह चढाए,
और रौदने आए।
फिर भी हे आत्मा! पहचानो
चिन्ता नेक न छाए।
बढ़े चलो हाँ बढ़े चलो; मत—
दाएँ-बाएँ रुकना।

तुम हो अजर, अरूप, सनातन,
ध्येय न भूलो अपना।

❖ ❖

साहसी, जो चाहता है
दुःख, मिल जाना मरण से,
नाश की गति नाचता है,
माँ उसी के पास आई।

❖ ❖

यदि घन मे रवि तनिक छुपा है —
यदि नभ मे तम घोर हुआ है।
तब भी वीर-हृदय पल भर तो —
कर्म-क्षेत्र मे डटे रहो।
विजय-लक्ष्मी आएगी ही,
कर्म-क्षेत्र में डटे रहो।

❖ ❖

शीत बीतती — ग्रीषम आता —
रिक्त भाग लहरो से भरता,

पड़े परस्पर दिखें खीच में
छाया और प्रकाश — बीच में
फिर क्यों इतनी चंचलता है ?
बनो वीर, क्यों यह लघुता है ?

❖ ❖

जीवन-कर्म सहज भीषण है।
उसका सब सुख—केवल क्षण है।
यद्यपि लक्ष्य अदृश्य, धूमिल है।
फिर भी वीर-हृदय ! हलचल है ?
अन्धकार को चीर अभय हो—
बढ़ो साहसी ! जग-विजयी हो।

❖ ❖

साहसी बन सत्य जीवन में भरो।
स्वप्न-जग को दूर आँखों से करो।
यदि न सम्भव, सत्य स्वप्नों को निहारो
प्रेम, सेवा रूप में निज प्राण वारो।

❖ ❖

तोड़ो जंजीरें जिनसे जकड़े हैं पैर तुम्हारे —
वे सोने की हैं तो क्या कसने में तुमको हारे ?
अनुराग-घृणा-संघर्षण, उत्तम वा अधम विवेचन,
इस द्वन्द्व भाव को त्यागो, हैं त्याज्य उभय आलम्बन।
आदर गुलाम पाए या कोड़ों की मारें खाए,
वह सदा गुलाम रहेगा कालिख का तिलक लगाए।

❖ ❖

दो अभय-दान सबको तुम —
"हो सभी शान्तिमय सुखमय,
है प्राणिमात्र को मुझसे
कुछ भी न कहीं कोई भय।"

❖ ❖

करते निवास जिस उर में
मद काम लोभ औ' मत्सर,
उसमें न कभी हो सकता
आलोकित सत्य-प्रभाकर।

❖ ❖

छोड़ो विद्या, जप-तप का बल,
स्वार्थ-विहीन प्रेम आधार
एक हृदय का, देखो शिक्षा
देता है पतंग पर प्यार
अग्निशिखा को आलिंगन कर . . . ।

❖ ❖

तन्त्र, मन्त्र, नियमन प्राणों का,
मत अनेक, दर्शन विज्ञान,
त्याग, भोग, भ्रम घोर बुद्धि का,
"प्रेम-प्रेम" धन लो पहचान ।

प्रार्थना

हे देव ! पूजित विश्व के अनुराग हो।
हो तोड़ते भव-बन्धनो के राग हो।
हे अपल ! तुम स्वर्ग-आभा युक्त हो
और सब 'गुण'-विकृतियों से मुक्त हो।
मन और वाणी के तुम्ही आवास हो
फिर न उनकी पहुँच के तुम पास हो।
चहुँ ओर फैली सहज निर्मल ज्योति हो,
है भर गया जिमसे हृदय निर्भ्रान्ति हो।
तुम जन-तमस-घन अन्ध करते दूर हो।
जाति, जय, कुल त्याग से भरपूर हो
हैं कर रहे जो भक्ति नित मद-शून्य हो
क्यों प्रभु तुम्हारा नेह उन पर न्यून हो ?

हो तुम्ही आश्रय —— शरण भी
नेत्र पल पल झर रहे हैं
वन्दना हम कर रहे हैं।

हमारे कुछ अन्य प्रकाशन

श्रीरामकृष्णवचनामृत—तीन भागों में—अनु० पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', प्र. भा. ६), द्वि भा. ६), तृ भा ७)

श्रीरामकृष्णलीलामृत (विस्तृत जीवनी)—दो भागों में, प्रत्येक भाग का मूल्य ५)

विवेकानन्द-चरित—एकमात्र प्रामाणिक विस्तृत जीवनी, मू ६)

धर्म-प्रसंग में स्वामी शिवानन्द (भगवान श्रीरामकृष्णदेव के अन्तरंग शिष्य)—दो भागों में, प्रत्येक का मूल्य २॥)

स्वामी विवेकानन्दकृत कुछ पुस्तकें

विवेकानन्दजी के संग में—(वार्तालाप)—मूल्य ५।)

भारत में विवेकानन्द—(विवेकानन्दजी के भारतीय व्याख्यान) —मूल्य ५)

पत्रावली—दो भागों में, प्रत्येक का मूल्य २=)

देववाणी—अन्तःप्रेरणा से भरे उपदेश, मूल्य २=)

शिक्षा . . ।।=) भारतीय नारी . . ।।।)

स्वामीजी की 'योग' पर पुस्तकें

ज्ञानयोग . . . ३) कर्मयोग . . . १।=) प्रेमयोग . . . १।=)

राजयोग—(पातंजल-योगसूत्र, सूत्रार्थ और व्याख्या सहित) ३॥)

भक्तियोग . . . १।=) सरल राजयोग . . . ।।)

हमारे कुछ अन्य प्रकाशन

श्रीरामकृष्णवचनामृत—तीन भागों में—अनु० पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', प्र भा. ६) द्वि भा. ६) तृ भा ७)

श्रीरामकृष्णलीलामृत (विस्तृत जीवनी)—दो भागों में, प्रत्येक भाग का मूल्य ५)

विवेकानन्द-चरित—एकमात्र प्रामाणिक विस्तृत जीवनी, मू ६

धर्म-प्रसंग में स्वामी शिवानन्द (भगवान श्रीरामकृष्णदेव के अन्तरंग शिष्य)—दो भागों में, प्रत्येक का मूल्य २॥)

स्वामी विवेकानन्दकृत कुछ पुस्तकें

विवेकानन्दजी के संग में—(वार्तालाप)—मूल्य ५।)

भारत में विवेकानन्द—(विवेकानन्दजी के भारतीय व्याख्यान —मूल्य ५)

पत्रावली—दो भागों में, प्रत्येक का मूल्य २≈)

देववाणी—अन्तःप्रेरणा से भरे उपदेश, मूल्य २≈)

शिक्षा . . ।≈) भारतीय नारी . . ॥

स्वामीजी की 'योग' पर पुस्तकें

ज्ञानयोग ...२) कर्मयोग . १।≈) प्रेमयोग १।

राजयोग—(पातंजल-योगसूत्र, सूत्रार्थ और व्याख्या सहित):

भक्तियोग ... १।≈) सरल राजयोग ...

'हिन्दू धर्म' पर स्वामीजी के प्रसिद्ध ग्रन्थ

हिन्दू धर्म	...१॥)	धर्मविज्ञान	...१॥=)
धर्म रहस्य	... १)	शिकागो वक्तृता	... ॥=)
आत्मानुभूति तथा उसके मार्ग	... १।)	हिन्दू धर्म के पक्ष में	...॥=)

स्वामीजी के कुछ अन्यान्य ग्रन्थ

वर्तमान भारत	... ॥)	हमारा भारत	... ॥)
मरणोत्तर जीवन	... ॥)	मेरी समरनीति	...॥=)
मेरे गुरुदेव	...॥=)	कवितावली	...॥=)
चिन्तनीय बातें	... १)	विविध प्रसंग	...१=)
परिव्राजक	... १।)	मेरा जीवन तथा ध्येय	... ॥)
जाति, संस्कृति और समाजवाद	... १)	स्वामी विवेकानन्दजी से वार्तालाप	...१।=)
विवेकानन्दजी की कथाएँ	.. १।)	व्यावहारिक जीवन में वेदान्त	... १=)
प्राच्य और पाश्चात्य	१।)	स्वाधीन भारत! जय हो!	१)

हमारे सम्पूर्ण प्रकाशनों के विस्तृत सूचीपत्र के लिए लिखिए:--

श्रीरामकृष्ण आश्रम, धन्तोली, नागपुर-१, म. प्र.